अंतरा-शब्दशक्ति

स्त्री तुम सृजक

(साझा काव्य संग्रह)

संपादक - डॉ. प्रीति सुराना

www.antrashabdshakti.com

स्त्री तुम सृजक

(साझा काव्य संकलन)

संपादक

डॉ. प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-91-8

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- डॉ. प्रीति सुराना

मूल्य - १२०.०० रुपये

आवरण चित्र- डॉ. प्रीति सुराना

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

STRI TUM SRIJAKA EDITED BY DR. PRITI SURANA

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	स्त्री तुम सृजक	डॉ. प्रीति सुराना	7-8
2.	नारी चालीसा	राजेन्द्र 'अनेकांत'	9-11
3.	समझ सको तो समझो मोल	मीनाक्षी सुकुमारन	12
4.	नारी का सम्मान करो	अर्चना कटारे	13
5.	है नारी नाम उस शक्ति का	रचना उपाध्याय	14
6.	मै भारत की नारी हूँ	बबीता चौबे शक्ति	15
7.	प्यार प्यार प्यार	कीर्ति प्रदीप वर्मा	16
8.	नारी सर्वमान्य महंत है	नवीन जैन	17
9.	एक संपूर्ण कृति	विश्वास जोशी	18
10.	नारी की यही कहानी	रेखा ताम्रकार 'राज'	19
11.	नारी तो है शक्ति स्वरूपा	राजेंद्र श्रीवास्तव	20
12.	मशाल	निमिषा लढा	21

13. कौन जानता था	डा रविंद्र बंसल "रवि"	22
14. महिमा तेरे रूप की	सीता गुप्ता	23
15. नमन हो नारी	D Kumar--अजस्र	24
16. महिला -दिवस	डॉ.सरला सिंह	25
17. महिला दिवस आज	कैलाश सोनी सार्थक	26
18. भारत की तुम नारी हो।	जागृति मिश्रा रानी	27
19. स्वीकार नहीं मुझे	बीना शर्मा 'झंकार'	28
20. नारी,तुम महान हो।।।	नवनीता दुबे "नूपुर"	29
21. नारी तेरे रूप अनेक	मनोरमा चन्द्रा	30
22. स्त्री	मधु तिवारी	31
23. अस्तित्व का विस्तार है नारी	रजनी शर्मा	32
24. हां मैं नारी	नवनीता कटकवार	33
25. मैं नारी हूँ	साधना मिश्रा कसडोल	34

26.	नारी का सम्मान	मंजू सरावगी	35
27.	हूँ मैं आज की नारी	अर्चना अनुप्रिया	36
28.	हे स्त्री !!	शीतल खण्डेलवाल	37
29.	नारी है जननी	अनिता मिश्रा 'सिद्धि'	38
30.	पीड़ा मेरे अंतर्मन की	साधना छिरोल्या	39
31.	नारी सम्मान का गणित	पारस नाथ जायसवाल 'सरल'	40
32.	यदि न कोई चिंतन होगा	प्रदीप सोनी 'शून्य'	41
33.	अनुपम उपहार	बबीता कंसल	42
34.	स्वयंसिद्धा	आभा दवे	43
35.	नारी बिना आधा है परिवार-अनिता मंदिलवार सपना		44
36.	नारी महिमा	कैलाश बिहारी सिंघल	45
37.	अबला	अंकित शुक्ला	46
38.	नमन नवनिधि नारी	कन्हैया साहू "अमित"	47

39. एक कदम भरोसे का रख	रमा प्रेम - शांति	48
40. आदर्श दुनिया	कृति गुप्ता	49
41. मैं अलंकृता	पिंकी परुथी "अनामिका"	50
42. सारा आकाश हमारा है	डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई	51
43. नारी शक्ति महान	मुकेश मनमौजी	52
44. मैं नारी हूँ	अर्चना जैन	53
45. वात्सल्य का अंजन	हेमन्त बोर्डिया	54
46. सृजन-शब्द से शक्ति का	डा. प्रीति सुराना	55
47. नारी	पूनम (कतरियार)	56
48. एक नहीं दो दो मात्राएँ	राधा गोयल	57-58
49. इक फुलवारी हूँ	केवरा यदु "मीरा"	59-60
50. मैं नारी हूँ	अर्चना जैन	61-62
51. औरत	सुधा शर्मा	63-64

स्त्री तुम सृजक

माना कि आज हम महिला दिवस मनाकर खुश है,... पर सच ये भी है कि समीकरण बदल गए हैं?? अकसर लोग हमेशा नारी की महानता के लिए ये सोच रखते आए हैं जो सच भी है,... क्योंकि स्त्री सृजक है,...

नारी घर की स्वामिनी, नारी घर की लाज।

नारी ने कल को जना,नारी ने ही आज।।

धीरे धीरे लोगो की सोच बदली नारी मुक्ति जैसी क्रान्तिकारी सोच और बदलाव ने समाज में कई आमूलचूल परिवर्तन किये,..कई तरह से सोच और सोच के साथ नारी और पुरुष के समीकरण बदले, नारी के अस्तित्व ने ऋण (-) से बराबर (=) और फिर धन (+) का प्रतिनिधित्व भी किया,..

लेकिन मुझे यही लगता है समीकरण कितने भी बदल जाएं,... मापदंड कितने भी परिवर्तित हो जाएं... समय का चक्र कितना भी आधुनिकता का लिबास ओढ़ ले,... स्त्री और पुरूष चाहे कितना भी शत्रुता, प्रतिद्वंदिता, विरोध और असहिष्णुता का प्रदर्शन करे,...प्राकृतिक नैसर्गिक और शाश्वत सत्य यही है कि ये शत्रु नही एकदूसरे का पर्याय हैं,...।

माना नारी ने जना, सकल जगत का वंश।

पर न भूलो हर वंश में,नर का भी है अंश ।।

मैं यह मानती हूं यदि स्वीकार कर ली जाए एक दूसरे की पूरकता तो संघर्ष का कोई कारण ही नही है,.. । क्योंकि स्त्री और पुरुष दिन और रात की तरह एक दूसरे से बिलकुल अलग हैं तन मन और आत्मा से तो क्या हुआ?? दिन और रात कभी एक दूसरे के बिना कालचक्र को पूरा कर पाए है,,...? स्त्री और पुरूष रच पाए है कभी अकेले किसी नई संतति को,.....?

तो फिर ये कोई संघर्ष क्यों? हर बार स्त्री के स्त्रीत्व और पुरूष के पुरूषत्व का माप-तोल क्यों? महत्व का आकलन और अस्तित्व पर प्रश्निन्ह क्यों? क्यूं हम

स्त्री और पुरूष के संकुचित संबोधनो को परे रख कर इंसान और इंसानियत पर मुद्दे नहीं उठाते??

एक और सवाल जो अक्सर मेरे मन में उठता है की हर बार ऐसा ही क्यूँ सोचा जाए,... कि "हर स्त्री के भीतर सीता का अंश होता है,.. और हर पुरुष के भीतर कहीं रावण सोया रहता है,.." कभी कोई क्यूं नहीं सोचता,..कि हर स्त्री में कहीं सूर्पनखा का अंश होता है,... और हर पुरुष के भीतर कहीं राम/लक्ष्मण रहता है ..."

मैं खुद एक नारी होने के नाते खुद से कई बार ये सवाल पूछती हूं कि कभी अबला और कभी,.. देवी बनकर,.. या फिर पुरूषों को ही दोष देकर सहानुभूति बटोरने या अपनी तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने की जरुरत क्यों है? हम खुद ही अपने लिये कई ऐसे पैमाने और दायरे तय करते हैं, .. जो स्त्री की पुरुषों से तुलना किये जाने को मजबूर करता है जिससे हमें बाहर निकलना चाहिए,..। पुरुष को हमेशा ही शक की नज़र से देखने की बजाय सोच बदलनी चाहिए,.. क्योंकि कोई भी व्यक्ति केवल अच्छा या केवल बुरा नही होता,..ये बात बिल्कुल सही है। और फिर हर बार हर बात को स्त्री और पुरुष के संदर्भ में वर्गीकृत किया जाए या हर बार स्त्री पृरुष को विमर्श का विषय बनाया जाए जरूरी तो नही,..? मैं और आप अपनी सोच के लिए स्वतंत्र हैं,.. पर काश सबको ये सही लगे कि,..

नारी की ही जय न हो, हो नर का भी मान।

जग में जनक जननी का,मान हो एक समान ।।

एक और निवेदन की स्त्री-पुरुष विमर्श से बहार निकल कर मानव-विमर्श की तरफ बढ़ें,..आज स्त्री पुरुष की तुलना से ज्यादा जरुरत है समाज में "मानव-विमर्श" की,.

संकलनकर्ता

संस्थापक:- अन्तरा-शब्दशक्ति

डॉ. प्रीति सुराना

नारी चालीसा

दोहा

माँ बेटी पत्नी सभी, नारी के ही रुप।
भारत माँ के रुप मे, नारी दिव्य स्वरूप।।

चौपाई

1

गौरव शाली जीवन गाथा।
हम सबकी जो भाग्य विधाता।।

2

नारी महिमा अपरंपारा।
जग से हरती जो अँधियारा

3

शक्ति रूप धर दुर्गा बनती ।
लक्ष्मी रुप मे विपदा हरती।।

4

सरस्वती माँ कंठ समाती।
जीवन को संगीत बनाती।।

5

झाँसी रानी अमर कहानी।
बच्चा बच्चा कहे जुवानी।।

6

नारी ममता की मूरत है।
समझो प्रभु की ही सूरत है।।

7

नर के आगे नारी चलती।
घर के सब दुख संकट हरती।।

8

नारी से नाराणय बनते ।
नारी से पारायण बनते।।

9

नारी ही तो जीवन देती।
पर बदले मे कुछ न लेती।।

10

आँगन की राँगोली बिटिया।
श्याम सलोनी सुंदर चुटिया।।

11

मंगल कलश सजाती मुनिया।
महिमा गाती सारी दुनिया।।

12

बेटी अपनी खूब पड़ेगी।
सारे जग मे फतह करेगी।।

13

पर नारी के गुण न तजेगी।
संस्कार भारती तभी रहेगी।।

14

घर को ही वह स्वर्ग बनाती।
बेघर का घर द्वार सजाती।।

15

पत्नि स्वरूपा उत्तम नारी।
पति धर्म की नित सहचारी।।

16

सास ससुर की सेवा करती।
उनके दुख संकट सब हरती।।

17

दया नीर से नयन छलकते।
हया धीर धर नयन झपकते।।

18

जया रुप धर नयन न झुकते।
नया रुप जब नयन मटकते।।

19

नारी आरी सम जब होती।
सारी सीमाएँ जब खोती।।

20

दहेज माँगती खुद भी देती।
अपनी बेटी एक चहेती।।

21

नारी रक्षा की अगुआई।
समझे नारी पीर पराई।।

22

तेरा मेरा भेद तजेगी।
नारी तब ही श्रेष्ठ बनेगी।।

23

नारी तब दीवाली तब है।
नारी जब खुशहाली तब है।।

24

नारी खुश धनवाली जब है।
नारी दुख बदहाली तब है।।

25

नारी मन को जो नर समझे।
नारी मन मे वो ना उलझे।।

26

नारी मन चंचल जो होता।
जो न समझे वो नर रोता।

27

नारी मन निश्छल तब होता
नारी सँग जब नर मन होता

28

नारी जैसे बिजली चमके।
नारी जैसे मोती दमके।।

29

नारी जैसे मेंहदी रँगले।
नारी वैसे दिल को रँगले।।

30

नारी सृष्टि सृजन करती है।
नारी कष्ट शमन करती है।।

31

नारी दुष्ट दमन करती है।
नारी सृष्टि चमन करती है।।

32

नारी सुंदरतम क्यारी है।
नारी अनुपम जग न्यारी है।।

33

नारी अतुलित वलधारी है।
नारी अतः नही हारी है।।

34

नारी की.नारी मे आभा।
नर बनने का मात्र छलावा।।

35

नर बन नारी क्या कर लेगी।
घर की खुशियाँ बस हर लेगी।।

36

अपना देश भी माँ कहलाता।
नारी रुप मे पूजा जाता ।।

37

जीवन दायी नदी स्वरुपा।
नारी का यह अद्भुत रूपा।।

38

गौरवशाली देश हमारा।
तभी विश्व मे सबसे न्यारा।।

39

नारी महिमा नारी महिमा।
सारी सृष्टि कहती जब माँ।।

40

माँ के रुप को लिखते ज्ञानी।
'अनेकांत'कवि तो अज्ञान

दोहा

नारी का सम्मान ही, ईश्वर का सम्मान।

नारी का बहुमान तब, हर घर स्वर्ग समान।।

राजेन्द्र 'अनेकांत' बालाघाट

समझ सको तो समझो मोल

नहीं चाहिए उपहार बस एक दिन का
नहीं चाहिए मान बस एक दिवस
नहीं चाहिए शुभकामना बस एक दिवस
देना है तो दो
हमें मान सम्मान
समझ ईश्वर् की सृष्टि हर दिवस ।।
मत रौँधो समझ धूल पैरों तले अपने
मत करो प्रताड़ित दे पीड़ा
चाहे हो मानसिक या शारीरिक
मत समझो खिलौना भर
तन मन बहलाने को ।।
देना है तो दो
मान सम्मान पूरा हर दिवस
हूँ जननी, बेटी, बहू,पत्नी,बहन
यूँ हर रिश्ते की हूँ संवाहिनी
मैं नारी सृष्टि की देन
हूँ अनमोल
बस समझ सको तो समझो मोल
बस मोल मेरा हर दिवस ।।

मीनाक्षी सुकुमारन

नारी का सम्मान करो

हर युग की यही पुकार रही,नारी का सम्मान करो।

नारी से ही घर चलता,नारी ही देश की शान है।।

नारी तुम उपवन की बगिया हो जो,सारा जहां महकाती हो।

तुम ही वो कली हो जो,समय पर पुष्प बन जाती हो।।

तुम ही लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा और कालीमाता हो।
तुम ही सृष्टि की सृजन कर्ता और संहार कर्ता हो।।
तुम ही देश की वीर सिपाही और प्रधानमंत्री हो।
तुम ही वायुयान उडाने वाली और अंतरिक्ष में पहुंचने वाली हो।।
तुम ही प्रेम और करूणा का सागर हो ।

और ममता, त्याग और शक्ति का समुन्दर हो।।

तुम परिवार की बहन,बेटी, माँ और कुल की मर्यादा हो ।

तो देश की आन, बान, शान भी हो।।

हे पुरूष प्रधान समाज
महिला दिवस मे बस इतना कर दिखाओ...
नारी को नारी रहने दो अबला मत बनाओ...

वरन...

हर बहन बेटी मशीन नहीं है जो उपयोग करते जाओ
उसमें भी चाह है अपनत्व है बस उनका सम्मान करते जाओ

अर्चना कटारे, शहडोल (म.प्र)

है नारी नाम उस शक्ति का

है नारी नाम उस शक्ति का
जो हर घाव सहती है।
सदा करती है हर एक काम, पर गुमनाम रहती है।
वो उड़ना जानती है,
पंख फैलाकर उंचाई में
मगर इस बात पर दुनिया, सदा अनजान बनती है।
सजाती है, बनाती है
हर एक ईंट की रंगत
मगर उस घर में ही, वो खुद सदा मेहमान रहती है।
वो गिरती है,बिखरती है
जमीं रहती है हिम्मत से,
हजारों गम जो सहती है, वो क्यों कमजोर बनती है।
कभी दुर्गा कभी काली
कभी लक्ष्मी भले जप लो
मगर पूजा करो उसकी, तुम्हारे घर जो रहती है।
कोई भगवान आए या
न आए तेरी रक्षा में,
खड़ी है संग में हरदम, जो देवी घर में रहती है।

रचना उपाध्याय

मै भारत की नारी हूँ

मै भारत की नारी हूँ हाँ मै भारत की नारी हूँ
फूल कहि हूँ कहि पर बन जाती चिंगारी हूँ
आंगन की मैं स्वर्ण चिरैया घर घर में मै रहती हूँ
कहीं बहू कहीं हूँ बेटी हर आंगन को महकाती हूँ !!
कहीं अहिल्या पाथर बन जाती कहीं शबरी बन जाती हूँ
कहीं सिया बन वन वन जाती पति ब्रत धर्म निभाती हूँ !!
कहीं कौशल्या बन जाती और राम धरा पर लाती हूँ
कहीं देवकी यशुमति बनके माखन कृष्ण चखाती हूँ !!
मैं भारत की नारी हूँ हाँ गंगा, गायत्री, तुलसी हूँ
कहीं रचाती रामायण तो हुलसी मैं बन जाती हूँ !!
मैं बहाती हूँ प्रेम सरोबर, ममता का मैं सागर हूँ
कहीं बन राधा प्रेम की गागर, जीवन भर छलकाती हूँ !!
मैं भक्ति हूँ, मैं शक्ति हूँ मैं ही आदि अंत का कारण हूँ
मैं सृष्टि हूं मैं वृष्टि हूं धरा की प्यास बुझाती हूं !!
मैं भारत की सोन चिरैया गीत मधुर मै गाती हूँ
कभी लोरी कभी राधा मीरा प्रेम गीत को गाती हूँ !!
कहि द्रोपदी बनकरके में ही महाभारत कराती हूँ
कहि सिया बन स्वर्ण लंका को पल में राख कराती हूँ
शक्ति का अवतार हूँ मै शारद वीणा धारी हूँ
काली भेष जब लेती हूं तो सर्वनाश कर देती हूँ।।

बबीता चौबे शक्ति

प्यार प्यार प्यार

छोड़ आती है,
घर-आँगन, गली-मोहल्ला,
संगी-साथी, माँ-बाप,
और परिवार!!
पाकर पुनर्जन्म
नया परिवेश
नए रिश्तेनाते
नया खानपान
यहां तक नया नाम!!
सर्वस्व समर्पण कर
करती है अंगीकार।
बनाती है दीवारों को घर
वह ऐसी है कलाकार !!
मंगलकामनाओं में
अपनी उम्र तक देती है वार।
मां,बहन, पत्नी,बेटी बनकर
लुटाती है ममता
और बरसाती है बस
प्यार प्यार प्यार !!!

-कीर्ति प्रदीप वर्मा

नारी सर्वमान्य महंत है

नारी
मरूस्थलों मे बहता
स्नेह और ममता का मीठा झरना है
जिसे अपनी मिठास से
हरियाली लाना है
सबको मिठास से भरना है
नारी
ममता, क्षमता, त्याग, समर्पण
जो मैं को भूलकर
हो जाती है हम
और परिवार, समाज की
रक्षा और सेवा में
कर देती है जीवन अर्पण
नारी
शिक्षा है
शक्ति है
मार्गदर्शक है
सृष्टि का आरंभ और अंत है
नारी सृष्टि रुपी मठ की
सर्वमान्य महंत है

नवीन जैन अकेला

एक संपूर्ण कृति

परमेश्वर की समग्र सर्जना,

एक संपूर्ण कृति,

प्रार्थना, प्रेम और प्रताप की स्वर्णिम आभा,

सृष्टि का अद्‌भुत चमत्कार और

दुनिया का एक मेव अनूठा आश्चर्य,

हम सब तेरे अनंत ऋणी हैं,

पहले जीवन के लिए जो तेरा वरदान है,

फिर अनुग्रहित है
इस सृष्टि को आकर्षक

और जीवन योग्य बनाने के लिए.....

हे नारी तुझको कोटि कोटि प्रणाम है।

विश्वास जोशी, इंदौर, म.प्र.

नारी की यही कहानी

मान और सम्मान हो
जीने का स्वाभिमान हो
हरेक नारी की यही
कहानी होना चाहिए ।।
अधरों पे हो मुस्कान
हो खुशी की पहचान
प्रेम, प्यार व प्रीत की
दीवानी होना चाहिए ।।
सरस मीठी बोली हो
माधुर्य रस घोली हो
आवाज में संगीत की
रवानी होना चाहिए ।।
सबको अपना माने
अपने हो या बेगाने
सौहार्द भरे मन की
वो रानी होना चाहिए ।।

रेखा ताम्रकार

'राज'

नारी तो है शक्ति स्वरूपा

नारी तो है शक्ति स्वरूपा-
अबला भला कहूँ कैसे।
वह सबला है, वह अमला है,
निर्मल सरिता हो जैसे।
सच पूछो तो सभी गुणों की,
खान अकेली नारी है।
समरथ और स्वयंसिद्धा वह
उसकी क्षमता भारी है।
लेकिन कभी विवश हो जाती,
ममता नीर बहाती है।
रिश्तों का सम्मान निभाने -
अपना मान भुलाती है।
अवसर अगर मिले तो नारी,
उड़ कर अम्बर भी छू ले।
और समन्वय ऐसा जैसे-
काँटों बीच सुमन फूले।
पत्थर बन कर दुख सह लेती,
बाँटे खुशी अभावों में।
मातृ-स्वरूपा निश्छल- भावी-
स्वर्ग है इनके पाँवों में।

राजेंद्र श्रीवास्तव

मशाल

सूरज का दरवाजा खटखटाने से लेकर
चाँद तारो को लोरी सुनकर सुलाती तुम
आकाश सा वात्सल्य छिपा तुम्हारे अंदर
समुद्र से भी ज्यादा गहरी तुम
घर के अंदर हो या बाहर हो
मुस्कुराकर सारे दायित्व निभाती तुम
कभी सखा,प्रेयसी पत्नी बनकर
हर पग पर साथ निभाती तुम
जब कभी आये काले बादल घुमड़कर
अपने बच्चों का छाता बन जाती तुम
कभी कृष्ण की बाँसुरी बनकर बजती
और सबका दुःख हर जाती तुम
बेशक माँगती हो भाई से रक्षा का वचन
पर उसकी ढाल बनने से नहीं घबराती तुम
नही हो तुम किसी के पैरो के पायल का घुँघरू
हे नारी! एक मशाल हो जो हरदम रौशनी फलाती तुम।।

निमिषा लढा

कौन जानता था

कौन जानता था ऐसा पड़ा ये नहले पे दहिला है
फूल कि फुफकार ये आज कि महिला है

शेर को ले गई बना बिल्ली पलक झपकते ही
शेरनी का भी मुहूर्त मैँ शिकार पहले पहिला है

समझते थे भाई खुद को बड़ा खिलंदड़
नई है लंका यहाँ अंगद का भी पाँव झट हिला है

मुए मरते हो तो मरते रहो यारों कि महफिल मैँ
बीबी किटी मैँ busy उसको नहीं कोई गिला है

चटाके बेलन झाड़ु खाते रहे मियां बनते ही
लाल गाल पे घिस हल्दी बताते पीलिये से हुआ पीला है

शादी तो है भाई "रवि" लड्डू मोतीचूर का
ना खाए पछताय खाने वाले बेचारे को भी क्या मिला है

डा रविंद्र बंसल "रवि"

महिमा तेरे रूप की

माँ बहन बेटी तेरे रूप तो अनेक हैं,
सबके लिए तेरा धर्म पर एक है ।
सेवा- सुश्रुषा और त्यागमयी ममता,
जीवन के हरक्षण बस तुझको यही भाता ।
संस्कार दात्री बन तू संस्कार देती,
बेटी बहन को प्यार तू सिखलाती ।
बेटा और भाई को स्नेह तू जतलाती,
दुखी हो कोई तो गले तू लगाती ।
ममता स्नेह और प्यार का बंधन,
है तुझसे संबंधित जीवन का हरक्षण ।
न होती अगर तू तो दुनिया न होती,
ये जिंदगी खोखली और वीरान होती ।
ये तीज और त्यौहार सब फीके हो जाते,
न होंठों की मुस्कान न चेहरे फिर खिलते ।
"तेरे हर रूप की महिमा बहुत है । "
जो खुश है इंसान ये तेरा ही असर है । ।

सीता गुप्ता दुर्ग छ. ग.

नमन हो नारी

नारी नाम नारायणी, नर नारायण नाथ ।
सती साक्षात सत्य सी,सुंदर शिव संग साथ ।
विद्या का वरदायिनी, वीणा कर वरदान ।
नारी नर की पुरणी, नारी नर की वाम।
गंगा,गइया,मही,प्रकृति,मां का ही पदनाम ।
मातृशक्ति नारी ही होती,जो ममता की खान।
मैत्रेयी, लोपा, गार्गी, वेद-पुराणों की शान ।
पन्ना,हाड़ी, रजिया से बना ये मुल्क महान।
प्रथम स्वतन्त्रता रण में भी,नारी ना रही पीछे ।
मणिकर्णिका, हजरत बेगम ने,फिरंगी नाक की नीचे ।
आजादी दिलवाने में भी,कई वीरांगनाओं के नाम ।
पुरुष संग प्रयासों से ही, पहुंची आज मकाम ।
सृष्टि के हर-एक क्षेत्र में, मातृशक्ति का योग।
नर वो केवल नर-पिशाच,जो नारी को समझे भोग।
वर्तमान में नारी को, जिसने समझा अबला है ।
गरत-पतन में आप ही गिरकर,मिट्टी में वो मिला है।
शक्तिस्वरूपा नारी तुम,इस जग का उत्थान करो ।
नर के संग तुम कदम मिलाकर, अटल-सत्य आयाम धरो।

D Kumar--अजस्र(दुर्गेश मेघवाल)

महिला -दिवस

जमाने के साथ चले चलना तो कोई बात नही,
आकाश की ऊँचाइयों को छुओ तो कोई बात बने।

कोमल बनो तो बनो कोई बात नहीं,
चट्टानों से टकराने की ताकत हो तो कोई बात बने।

महिला दिवस मनाओ तो मनाया ही करो,
हर दिवस को ये दिवस बनाओ तो कोई बात बने ।

सजे रहना तो खिलौनों को ही भाता है,
किस्मत को खुद से सजाओ तो कोई बात बने ।

दूसरे के सहारे से चलना तो कोई चलना नहीं,
दूसरे का सहारा स्वयं बन जाओ तो कोई बात बने ।

महिला हो महिला होना तो कोई बात नहीं,
महिला संग सबला हो जाओ तो कोई बात बने ।

डॉ.सरला सिंह, दिल्ली

महिला दिवस आज

महिला दिवस आज,
महिलाऐं करे नाज
नर का दिवस नहीं,
आता एक बार क्यूँ
नारी बिना ये नहीं हो,
नारी बिना वो नहीं हो
नर को मिले न ऐसा,
नारी जैसा प्यार क्यूँ
नर बिना नारी क्या है,
जानती ये दुनिया है
फिर भी मिला नहीं है,
नारी जैसा सार क्यूँ
नारियाँ सदा सताए,
रो के जंग जीत जाए
नर है अभागा ऐसा,
उसे मिले हार क्यूँ

कैलाश सोनी सार्थक

भारत की तुम नारी हो।

निर्मल कोमल भाव सरस,
भारत की तुम नारी हो।
नहीं किसी खंजर से तुम,
अपने दिल से हारी हो ।

बांध रखा सबको बंधन में,
जैसे खुशबू हो चंदन में।
सभी रूप में प्यारी हो,
अपने दिल से हारी हो।

रखे गम दिल के अंदर,
औ मुस्कान बिखेरे सुंदर।
सभी कला में न्यारी हो,
अपने दिल से हारी हो।

सुंदर मन और कोमल काया,
लगती अद्भुभुत तुम हो माया।
फूलों की तुम क्यारी हो,
अपने दिल से हारी हो।

जागृति मिश्रा रानी

स्वीकार नहीं मुझे....

स्वीकार नहीं मुझे
पुकारी जाऊँ विभिन्न नामों से
नहीं चाहती
कवि/ साहित्यकार बनकर करे कोई अलंकृत
विभिन्न् उपमेय/ उपमानों से क्यों आखिर क्यों...???
कृति हूँ मैं विधाता की
पुरुष की बन सहचरी
सृष्टि के संचालन
रही बराबर की साझेदार
क्यों होता दोयम दर्जे का व्यवहार
ऐलान करती हूँ
विधाता ने गढ़ा जिस रुप में
पहचानी जाऊँगी उसी रुप से
यही होगा अब स्वीकार मुझे
इतिहास दोहराना
इतिहास बनना अब स्वीकार नहीं मुझे
खुद बनूँगी इतिहास,,
मैं नारी हूँ
भारत बदल रहा है
मैं भी गढ़ रही हूँ नित नये-नये क्रीतिमान....

बीना शर्मा 'झंकार'

नारी,तुम महान हो।।।

क्षमा,सहनशीलता की मूरत,
ममता,वात्सल्य की खान हो,
नारी,तुम महान हो।
ईश्वर का दूसरा रूप,
झेलती, कभी छांव धूप,अद्भुत ईश्वर की कृति,खुद में समेटे जहांन हो।।।।
नारी,तुम महान हो।।
पुरुष अस्तित्व की पूर्णता तुमसे ही,
सृष्टि अधूरी तुम बिन,
अंतरिक्ष को छू रही आजकल,नहीं पिछड़ी कंही अब,
तुम ही तो प्रगति की सच्ची पहचान हो।।।
नारी,तुम महान हो।।।

नवनीता दुबे "नूपुर"

नारी तेरे रूप अनेक

अनेक रूप है, नारी तेरेपूत जनन कर, जननी कहाती
स्नेह करुणामयी, मूरत तेरी, संकटों से न, तू घबराती।

अपने आत्मसम्मान के लिएलड़ जाती, सारे जग से
सबला बनकर, जीवन जीती, तुझमें धैर्य के खान, हैं भरे।

बेटी बहन माँ का, रूप धरती संबंधों के सूत्र में, ढलती
पुरुष संगिनी बनकर, नारी, अपना फर्ज, नित पूरा करती।

वात्सल्य तुझमें, अथाह भरा सब पर प्रेम, लुटाती है
खेल जाए जो, नारी अस्मिता से, उसको सबक, सिखाती है।

होती नारी, स्वाभिमानीसरस हृदय, दयालू, बलिदानी
कभी कहाती, अम्बा भवानी, काली, महमाया, जग कल्याणी।

सृष्टि सृजन, तुम बिन असंभवतू सबका है पालनहारी
दुनिया के हर जगहों में, महिमा तेरी, अमिट है छाई।

मनोरमा चन्द्रा, रायपुर(छत्तीसगढ़)

स्त्री

स्त्री शब्द में अर्थ है विस्तृत त्री या त्रय है।
सृष्टा, पालनहारा और संहारा।
वह ब्रम्ह बन सृष्टि करती
पालन करती विष्णु रूपधर
असह्य अत्याचार बढ़ने पर
जग को शिव रूप में संहारे भी वह।
सृष्टि अनवरत करती वह जग में संतानोत्पत्ति कर
पालन में लगन,प्रेम,ममता, त्याग समाहित हो।
पर संहार या विध्वंस.....?
जब निज देह पर, संतति, प्रेम पर आघात हो
तो वह बन जाती है विध्वंसक
संघारक बनना तय हो जाता है उसका
अन्यथा क्षमा, धैर्य, सहनशक्ति लज्जा से
वह श्रृंगारित है।
जिसे वह तभी उतार फेंकती है....
जब संहारक मौके आते हैं
वह भी दूर ....बहुत दूर ....पर
यह है उसका चरित्र अति विचित्र।

मधु तिवारी, दुर्ग,छत्तीसगढ़।

अस्तित्व का विस्तार है नारी

हर जान का आधार है नारी
बरसाती अमृत का मेह है
मत समझो
वासना का गेह है
ममता की वो पावन ज्योति
स्नेह नेह के झरते मोती
हर काल में दी अग्निपरीक्षा
दिखाती रही अपनी तितिक्षा
बन अहिल्या पत्थर हो जाती
काली दुर्गा रूप धर वो जाती
माँ बहन सखा बन
करती प्यार है
न जाने इसके
कितने किरदार हैं
नानक पीर पैग़म्बर जितने
पाले अपनी कोख में इसने
कटे पंख इसके कई बार
ऊंचा उड़ी वो उतनी बार
कभी गाँव की तो कभी शहरी वो
हदों में भी बेहद गहरी वो
प्रेम करुणा का बनती है चंदन
समस्त मातृशक्ति को है मेरा वन्दन

रजनी शर्मा

हां मैं नारी

विधाता की गढ़ी सबसे सुंदर रचना, हर रूप में अनमोल हूँ ।
कभी माँ बन में ममता का सागर लुटाती हूँ ।
कभी मैं प्रथम शिक्षक बन सही राह दिखाती हूँ ।
कभी मैं राखी बन भैय्या के हाथों में सज जाती हूँ
कभी मैं रक्षासूत्र बन सावित्री का किरदार निभाती हूँ ।
पहचान बन जाती है मेरी घर गृहस्थी।
उदार हूँ इतनी की
अपनी हस्ती भूल कर भी हरदम मुस्कुराती हूँ ।
जब मैं बेटी हूँ घर की रौनक बन जाती हूँ ।
बहु के रूप में कुमकुम भरे पाँव से जब मैं घर में आती हूँ ।
रखती हूँ मान दो कुलों का,
वंश का नाम मैं ही तो आगे बढ़ाती हूँ।
कभी प्रेयसी हूँ तो कभी सखी,
मैं ज़िंदगी में उंमग भर जाती हूँ ।
मेरे बिना है सारा गुलशन अधूरा,
घर संसार अधूरा, जीवन अधूरा,
मैं ही तो घर को स्वर्ग बनाती हूँ
हां मैं नारी ।
विधाता की गढ़ी सबसे सुन्दर रचना, हर रूप में अनमोल हूँ ।

नवनीता कटकवार, बालाघाट

मैं नारी हूँ

मैं नारी हूँ
प्रेम की रसधार हूँ
प्रकृति का सृजनहार हूँ।
मैं बिंदिया हूँ, पायल की झंकार हूँ
मैं प्रीतम का शृंगार हूँ।
मैं करुणा हूँ स्नेह व विश्वास हूँ
ईश्वर का प्रतिरूप हूँ।
मैं प्रीति हूँ, अनगढ़ रीति हूँ
इतिहास की गवाह हूँ।
मैं ममता हूँ, मैं निर्मात्री हूँ
सृष्टि की रचनाकार हूँ।
मैं श्रद्धा हूँ बुद्धि और इड़ा हूँ
प्रकृति का इतिहास हूँ।
मैं नागिन हूँ, जहरीली फूँकार हूँ
प्रतिशोध की हूँकार हूँ।
मैं ज्वाला हूँ, जलती अग्निशिखा हूँ
अन्याय का प्रतिकार हूँ।
मैं रनचण्डी हूँ, दुर्गा, महाकाली हूँ
लपलपाती तलवार की धार हूँ।
मैं यश हूँ मैं कीर्ति व जय हूँ
सृष्टि का अनुपम उपहार हूँ।

साधना मिश्रा कसडोल

नारी का सम्मान

जब जब इस धरा पर नारी का सम्मान हुआ
मानकर उसको ममता की मूरत, श्रृद्धा गान हुआ
दरिया दिल रखकर जब नारी ने क्षमा का श्रृंगार किया
तब हार्षित होती धरा सुहानी ये मन आनंदित होता है
धरा ने भी अपने गुण देकर नारी को सम्पूर्ण किया
त्याग, महानता, सहनशीलता हया, शर्म, कोमलता भरकर
तन मन में भर सुंदरता अंलकारो से अलंकृत किया
क्षमा दान भावना देकर पुरुष से महान बनाया
धरती सा उपकार है करती हस कर हर दु ख सह लेती
माँ, बहन, बेटी, प्रेमिका, पत्नी हर रिश्ते निभाने लेतीं
नारी को कमजोर न समझना नहीं है वह अबला नारी
जिसने उसको दुर्बल समझा भूल पड़ी है उसको भारी
लेतीं है जब प्रति शोध अपना भंयकर रूप है दिखलाती
ज्वाला मुखी सा फट कर लावा गर्म बिखराती
आंधी, तूफान, पानी, ओलावृष्टि प्रतिकार पूर्ण कर लेती
नारी भी यह स्वरूप रख भंयकर बदला ले लेती
जब जब बेटियां खेलतीं घर के आंगन में
तब हर्षित होती धरा सुहानी ये मन आनंदित होता है

मंजू सरावगी, रायपुर छतीसगढ़

हूँ मैं आज की नारी

हर तरह के तजुर्बों से
खुद को बहुत संवारा है मैंने..
रास्ते में समस्याएं हजार थीं,
परेशानियों में भी खुद को निखारा है मैंने..
कैसे भी हालात हों अब
उनके मुताबिक खुद को ढाल लेती हूँ मैं..
मुश्किलें कैसी भी आयें,
हल उनका निकाल लेती हूँ मैं..
डर जाती थी पहले परछाई से भी,
अब साँपों के जहर भी बेकार हैं मुझपर..
काली बनकर काट लेती हूँ सिर,
अगर अनैतिकता का तलवार हो मुझपर..
दिल के भाव जब सच्चे लगते हैं,
उनमें प्रेम के मैं ख्वाब भर देती हूँ..
झूठी मुस्कानें छल लेती थीं पहले,
अब हर साजिश बेनकाब कर देती हूँ..
बहुत सहेजा खुद को अबला मानकर,
अब हर पत्थर का प्रतिकार करती हूँ..
इक्कीसवीं सदी की नारी हूँ मैं,
आत्मविश्वास से अपनी जयकार करती हूँ...

अर्चना अनुप्रिया

हे स्त्री !!

हे स्त्री !! तुम थकती नहीं हो क्या,,?
किरदार निभाते निभाते
एक अच्छी बेटी से
एक अच्छी माँ तक,,
इस बीच एक पत्नी का भी
जहाँ देती हो तुम अग्नि परीक्षा
ससुराल मायके के बीच
खुद को मिटाते मिटाते,,,
हे स्त्री !! सवेरे से शाम तक
कभी माँ, कभी बेटी,
कभी बहन तो कभी पत्नी,
अनगिनत रूप
ढ़ेरों रंग लिए
निभाती हो सारे दायित्व
मिटाती हो अपना अस्तित्व
तिल-तिल, दिनभर, उम्रभर,
फिर भी चेहरे पर
सदा हँसी, मुस्कान और उमंग लिए
हे स्त्री !! तुम थकती नहीं हो क्या ?

शीतल खण्डेलवाल

नारी है जननी

नारी है भामिनि
नारी से संसार
नारी शक्ति का आधार
नारी का हर रूप पावन
सुगन्ध बन हर ओर महकता है।
नारी पत्नी
नारी प्रेयसी
नारी बहना
नारी तनया
नारी सृष्टि
नारी का हर रूप मन- भावन।
ममता बन हर ओर छलकता है।
नारी ज्वाला
नारी काली
नारी दुर्गा
नारी दामिनी
नारी भामिनि
ना छलो तुम इसको कलियुगी दानव ।
अंगार बन इसका रूप भी दहकता है।

अनिता मिश्रा 'सिद्धि'

पीड़ा मेरे अंतर्मन की

एक नारी के मन की पीड़ा,एक नारी ही समझ न पाये,
एक नारी को दुःख देने से, एक नारी ही है बाज न आये।।

एक नारी की सूनी कोख पर, एक नारी ही तंज है कसती,
एक नारी के रूप-रंग पर एक नारी हँसी-ठिठोली करती।।

कितने जख्म लगे सीने पर, कभी नहीं जो हैं भरते,
नारी ही नारी की दुश्मन, यूँ ही लोग नहीं कहते।।

अपने अंतर्मन की बगिया को, खुद को ही सींचना होगा,
पुरुषों की तो बात ही छोड़ो, पहले नारी से ही जूझना होगा।।

एक नारी,दूजी नारी को, जब तड़पाना बंद करेगी,
महिला दिवस मनाने की, सार्थकता तभी सिद्ध होगी।।।।

साधना छिरोल्या दमोह(म.प्र.)

नारी सम्मान का गणित

नारी सम्मान का यही गणित,
अंगुलियां उठ जाती थीं,
हम पर सबकी,
ज्यों ही कदम बाहर करती।
किंचित न अडिग हुई पथ से,
सह लिया उपहास
सबका हमने,
संघर्ष किया हमने जग से,
जैसे-तैसे छू लिया लक्ष्य,
पूर्ण कर किया अपना ध्येय।
फिर हुए चमत्कार,
नित-नित जो उंगुलियां उठाती थीं,
वही हथेली अब खूब
तालियां बजाती हैं।

पारस नाथ जायसवाल

'सरल'

यदि न कोई चिंतन होगा

नारी स्मिता पर यदि न कोई चिंतन होगा।
उसकी संप्रभुता पर यदि कोई बंधन होगा।

होगा बिना नीर की सरिता सा यह समाज,
कैसे अपनी संस्कृति का अभिनंदन होगा?

यदि ममता को मिली सिर्फ करुणा, घृणा,
फिर मानव महलों में केवल क्रंदन होगा।

स्नेह प्यार ममता लज्जा ये अलंकार सब,
खो जाएँगे हम में से ये केवल मंचन होगा।

'शून्य' नारी है हृदय सबके जीवन देह का,
बिना हृदय के कैसे, बताओ स्पंदन होगा।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

अनुपम उपहार

मुस्कुराहट से खिलते है फूल
गुनगुनाहट से चलती है श्वास
नदी की मानिंद बहती हो
बहता है जीवन संसार,
हर दुविधा मे, संघर्षों मे
दुख हो या पीड़ा मे डगमगाते नही कभी कदम
भरी हो साहस से,हर पल
खिलती हो फूलो सी,
बनी रहती कोमलता,
खुशबू भरी स्वच्छता,
आचँल मे समेटती हो,मृदुता को
धरती का सौभाग्य हो ।
धरती के भाल पर सुरज सी बिन्दी सम,
तुम बिन नही दुनिया का विस्तार
तुम ही प्रकृति,तुम ही शक्ति,
तुम ही विधाता का अनुपम उपहार,
तुम हो स्त्री ....तुम हो मां ...।
तुम से ही है,ये सौसार...।।

बबीता कंसल, दिल्ली

स्वयंसिद्धा

जगत की जननी तू है नारी
आँचल के तले ही तेरे दुनिया बसे
तू है गुरु प्रथम इस सृष्टि की
तेरे चरणों में शीश झुकाते हैं देवता
शत्- शत् वंदन करुँ तुझे नारी
प्रसव की पीड़ा को झेलकर
पुनः सृजन तू कर रही, नवजीवन उसमें भर रही,
अलग-अलग तेरे रूप है, हर रूप में तू सज रही
आँगन मैं बेटी बन फूलों सी महक रही
और चिड़ियों सी चहक रही
बहु बन किसी घर की उजाला उसमें भर रही
नारी के हर रिश्ते को बखूबी तू निभा रही
हर रिश्ते में छुपा हुआ तेरा प्यार है
फिर प्यार को ही ललचा रही
देख तू है स्वयंसिद्धा अपने आप को पहचान ले
ईश्वर की अद्भुत शक्ति है तू इस बात को जान ले
जुल्म को न बर्दाश्त कर, न जुल्म होने दे
खुद का ही सम्मान कर, खुद को अपनी नजरों में उठा
जो है तेरे पास खुशियाँ, इस दुनिया पर लुटा
जिसमे इक स्वर सुनाई दे, मैं हूँ स्वयंसिद्धा, मैं हूँ स्वयंसिद्धा

आभा दवे

नारी बिना, आधा है परिवार

घर नहीं नारी बिना, आधा है परिवार ।
नारी का सम्मान हो, नारी जग आधार ।।

जीवन देती भी वही, नारी से संसार ।
नारी घर की आन है, नमन है बार बार ।।

लक्ष्मी है कभी शारदा, नारी के सब रूप ।
हर रूप में गरिमा दिखे, नारी जनम अनूप ।।

अब महान मत जानिए, नारी को अवतार ।
बराबर समझ जानिए, जीवन का यह सार ।।

नारी अब अबला नहीं, शक्ति स्वयं पहचान।
हक के लिए लड़ो स्वयं, तब होगा उत्थान।।

अनिता मंदिलवार सपना
अंबिकापुर सरगुजा छतीसगढ़

नारी महिमा

नारी तेरा रूप अलौकिक...युग दृष्टा कहलाती हो,
दाता की भी माता बनकर...भाग्य पर इठलाती हो...!
माता बनकर जन्म दिया तो...
कष्ट सहकर के पाला है,
बहना रूप में लाड़ किया तो...
बेटी बन के संभाला है,
पत्नी बनकर सहचर्या सब...
दुख दर्द सह जाती हो...,,दाता की भी माता बनकर...
भाग्य पर इठलाती हो...! नारी तेरा रूप अलौकिक...!!
नव-दुर्गा का रूप तुम्हारा...
शक्ति रूप अवतारी हो,
नारी का सम्मान जो करता...
तुम उसकी भवतारी हो,
तप बल पर सावित्री बनकर
पति के प्राण बचाती हो...,,दाता की भी माता बनकर...
तुम भाग्य पर इठलाती हो...! नारी तेरा रूप अलौकिक...!!
बन सीता वनवास निभाया...
राधा बन सिंदूर न पाया,
मीरा बन पति मान लिया तो...
पांचाली बन धर्म निभाया,
पत्थर की अहिल्या बनकर...
राम चरण रज पाती हो...,,दाता की भी माता बनकर...
भाग्य पर इठलाती हो...! नारी तेरा रूप अलौकिक...!!

कैलाश बिहारी सिंघल

अबला

तूझको मारा...सताया तुझे..
कौख में ही मिटाया तुझे..
तेरी ताकत समझ न सके..
दुखती नस ही जताय तुझे...
तुझको केवल खिलौना समझ...
तूझसे बस खेलते ही रहे...
तेरी खुशिया ही सब छीन ली...
फ़कत सहना सिखाया तुझे...
तूझको मारा सताय तुझे....
कोख में ही मिटाया तुझे.....
ये रिवाज़ो क बाज़ारो से...
तुझको मुफ़्त के तौह्फे मिले...
तुझको टोका हर एक साँस पे...
अपनी अडचन बताया तुझे...
तुझको मारा सताय तुझे.....
कोख में ही मिटाया तुझे.....
तूझको लुटा सरे राह पे...
ये भी सब देखते ही रहे...
यूँ कोई हिम्मत दिखा न सका..
नारी "अबला" बताया तुझे..
तुझको मारा सताय तुझे...
कौख में ही मिटाया तुझे....

अंकित शुक्ला, खरगोन

नमन नवनिधि नारी

जननी जीवाधार, जगत की जिम्मेंदारी।
नूतन नित नवकार, नमन है नवनिधि नारी।
नित्य नये प्रतिमान, स्वयं साहस से गढ़ती।
मिला कदम से ताल, निरंतर पग पग बढ़ती।
खुद रचती इतिहास, अडिग अभिजित् आरोही।
वंदनीय है नार, संगिनी वाम बटोही।
अधिगुण अनु अधिभार, अवन अविकल अविकारी।
नूतन नित नवकार, नमन है नवनिधि नारी। -1
उड़ती उच्च उड़ान, अथक बस अपने दमपर।
दफ्तर घर दरबार, नहीं है वह अब कमतर।
संवेदी पहिचान, मोम सी माया ममता।
कोमल और कठोर, धरातल जैसी क्षमता।
काज करे पुरजोर, सेविका सद सहचारी।
नूतन नित नवकार, नमन है नवनिधि नारी। -2
स्वयं भाग्य की रेख, खींचती आज अकेली।
समानता सद्भाव, बूझती कर्म पहेली।
समझ सहित सहकार, सदन को करती उपवन।
सम्यक सोच विचार, सहज सुलझाती उलझन।
चाह न वेतनमान, मान की यह अधिकारी।
नूतन नित नवकार, नमन है नवनिधि नारी। -3
जननी जीवाधार, जगत की जिम्मेंदारी।

कन्हैया साहू "अमित" भाटापारा~छत्तीसगढ़

एक कदम भरोसे का रख

बस .... एक कदम तू
अपने भरोसे का रख
फिर देख
सारा जहां तेरा होगा
अधूरी, बंद रखी थी
जो तूने
अनगिनत ख्वाहिशे
पूरा होता दिखेगा
आसमान छूने का
सपना तेरा भी
जरूर पूरा होगा
तू भी किसी से
कम नहीं
बस इतना सा ही
तुझे सोचना होगा
फिर देखना
मंजिल तेरे
कदमो के नीचे
और आसमान भी
सलाम करेगा
नारी तू
धरती के समान
सबल, जननी, जीवनदायिनी
प्रेम का सागर
तेरे बिना संसार अधूरा
और नहीं कोई
तुझ सा दूजा
तुझे इसे अच्छे से
अब समझना ही होगा
बस तुझे साबित
करने के लिए
अपना कदम
समयानुसार बढाना ही होगा।

रमा प्रेम - शांति, बालाघाट

आदर्श दुनिया

क्या सोचा है कभी तुमने?
क्यों फाड़ रहा कानों को तुम्हारे
ये महिला दिवस का गहरा शोर?
क्यों बह पड़ी अचानक यूं
ये अधिकारों की हवा पुर ज़ोर ?
क्यों गूंज रहे ये तेज़ आवाज़ में
नारी सम्मान के नारे हर ओर?
कल तक
चलती थी जो कोमल सी छवि
चुपचाप सर को अपने झुका कर
आज क्यों ऐसे बिफर पड़ती है
तुम्हारी हर अनुचित बात पर?
काश!
जब तुम्हारी बहन को उस रात
थाली में सूखी रोटी परोसी थी
तुम्हें मिले मालपूए रबड़ी को
वो बस देख देख कर चखती थी
तब तुमने एक निवाला रबड़ी का
उसकी भी ओर बढ़ाया होता
काश!
जब मां पूरे घर को खाना खिला
खुद दो रोटी लेकर बैठी थी
पर बर्तनों के ढेर की चिंता
फिर भी उसके मन को घेरे थी
तब तुमने वो ढेर बर्तनों का
आगे बढ़ अगर निपटाया होता
काश!
जब तुम्हारा कंधा बनने को
तुम्हारी संगिनी तुम्हारी साथी
दोगुनी मेहनत करने को तैयार
घर से बाहर कदम बढ़ाती थी
तब तुमने भी उसको तड़के उठ
गर्म चाय का कप पकड़ाया होता
काश!
जब वो बहू जिसे तुम
लाखों में से चुन कर लाईं थीं
खाने में भूली नमक कभी
कभी जीन्स को लेकर मचली थी
तब तुमने भी सास से मां बन
उसे गले से लगा समझाया होता
तो ना होता ये शोर,
ना चलती हवा पुरजोर
ना गूंजते नारे हर ओर...
बस होती...एक बेहतर दुनिया
प्यारी भरी दुनिया
समानता की नींव पर बसी
एक आदर्श दुनिया!

- कृति गुप्ता, नई दिल्ली

मैं अलंकृता.....

नाम, काम, प्रसिद्धि,
वैभव, सम्पन्नता,
शिक्षा, योग्यता,
माना कि आवश्यक होंगे,
अस्तित्व के परिचय के लिए,
किन्तु मेरा परिचय,
वो तो याद ही नहीं रहा,
पता नहीं कब, कहाँ, कैसे, क्यों,
हाँ इतना तो याद है,
अपने अपने नाम से,
अपनी अपनी आवश्यकताओं के
लिए,
पुकारा गया,
अपने अपने काम से,
पूर्ति हो जाने के बाद,
विस्मृत कर दिया गया।
समय कहाँ था,
यह सोचने का कि,
उपयोग हो रहा है,
धर्म, कर्त्तव्य, परम्परा,
परीक्षा, परिणाम आदि के
लिए,
उपभोग हो रहा है स्वयं का,
सजग, सचेत किया गया।
गृहलक्ष्मी, बुद्धिमान,
अन्नपूर्णा, सर्व गुण संपन्न,
नामों से अलंकृत किया गया,
कभी मित्रता, कभी संबंधों को,
आधार बनाकर,
संकल्पों को पूरा किया गया।
हाँ मैं हूँ विशेष,
भिन्न-भिन्न,
नामों से पुकारे जाने वाली
नारी,
मैं अलंकृता.....!

पिंकी परुथी "अनामिका"
बारां,राजस्थान

सारा आकाश हमारा है

सुनो!

सुख मिले तो उसे जीने को
शामिल करो सबको
पर दुःख में
बहते आँसुओं को
थामने-पोंछने
अपना हाथ
अपना रुमाल स्वयं बनो
पर इत्तनी भी उन्मुक्त
दर्पयुक्त न बनो
कि अपनों,
आस-पास गुजरने वालों की
पदचाप सुन कर
उन्हें पहचान ही न सको
अस्तित्व बराबरी की
प्रतियोगिता से संपृक्त हो
बाज़ारवाद की
चपेट से बचते हुए सोचो
तुम अर्थ हो
घर-संसार का
सफलता में कहीं
तुम पीछे हो किसी के
तो कहीं
कोई पीछे है तुम्हारे
सबके साथ
मिल कर लिखती हो
जीवन के अध्याय
तो फिर अपने लिए
किसी एक दिवस की
आवश्यकता क्यों अनुभव करें
हर दिवस तुम्हारा
हम सबका है
वो जो
लोहे के बंद दरवाज़े है
उन्हें खोल कर
लिखो नई इबारत
जो कल
नया इतिहास रचेंगी
अपने रंगों को समेट
उठो, चलो, दौड़ो मिल कर
देखो.. दूर-दूर तक
सारा आकाश तुम्हारा है

डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई

नारी शक्ति महान

नारी शक्ति महान
हुई आज ही
क्यों ये पहचान
जिसे देखो वहीं
नारी के गुण गा रहा
नई नई रचनाओं से
पटल खूब सजा रहा
क्या ये दिखावा मात्र
आज के लिये,क्योंकि
आज महिला दिवस
कल से फिर महिला
पुरुष के आगे विवश
चारदीवारी में बंद
बस घर चलाने की जिम्मेदारी
समय पर ये,समय पर वो
समय से चुके तो सुने
फटकार हमारी,
दाल में नमक कम तो फेंको
थाली
चाय बने पतली तो दे दो गाली
दिन रात बस करें सेवा
मिलें नही कोई इसको मेवा
निसंतान हो तो कह दो बांझ
बेटी जन्में तो उपेक्षा सुबह
सांंझ
बेटे को भूखी रह कर भी पाले
मिलते नहीं बुढापे में इसे
बिन माँगे दो निवाले
नारी,नारी कह आज सब
कह रहें नारी महान
सच में करो यदि रोज नारी का
गुण गान, दो उसे उसकी
पहचान
तो जीवन सबका सार्थक हो
जाइये
नारी है ये भगवान भी है
इसी नारी की कोख के जाये
नारी से ही धन्य सदा ये धरा
धाम
नारी शक्ति को करो सदा
प्रणाम

मुकेश मनमौजी

मैं नारी हूँ

मन कोमल,तन कोमल,
इरादों से फौलाद,
सुनो न मितान.....
मुझे भी दो न
खुला आसमान,
न काटो पर मेरे
भरने दो न
ऊंची उड़ान,
ढूंढ लाऊंगी सुकून
स्वीकार करो न
मेरा सम्मान
मैं नारी हूँ.....
मुझे भी दो न
सप्त सुरों संग बंशी की शान
गाने दो न
मुझे भी अपना गान
मत करो न
पर्दों में रख मुझे अंधेरा
आने दो न
मेरा भी अपना विहान
मैं नारी हूँ....

कहाँ मांगे
मैंने सूरज और तारे
कहाँ मांगे
मैंने मोती और हीरे
बिठाओ न
बस अपने बराबर मुझे
दोनों का हो न
एक साझा वितान
मैं नारी हूँ
एक बार मत सोचो न
कि माँ हूँ मैं
एक बार मत सोचो न
बहन या बेटी मैं
निभाऊंगी मैं ताउम्र
ये सभी किरदार
करने दो न एक बार
पूरे अरमान
मैं नारी हूँ
मन कोमल, तन कोमल,
इरादों से फौलाद
सुनो मितान
सुनो न मितान.....

अर्चना जैन, मंडला

वात्सल्य का अंजन

चाहे कितने शफ्फाक हों
उजाले बाहर...
या रौनकें रिझाती हो
मायावी दुनिया की...!
चाहे पड़ती रहे उसके कानों में
तुम आज़ाद हो ..आज़ाद हो..
की आवाज़...!
चाहे मान चुकी हो दुनिया
उसके त्याग, समर्पण और शौर्य
का
लोहा ..कई दफ़ा...!
चाहे ..वो गुथी हुई हो
ज़िन्दगी की रजाई में
अपने तमाम किरदारों का
धागा बनकर...
सम्भालती आदमी को
टूटने, बिखेरने,ठिठुरने से..!
कभी वो मन और तन का
रंजन बनी..
कभी बनी है आँखों में
वात्सल्य का अंजन...!
चाहे अर्पित किये हो
इतिहासों ने इसे अनगिनत फूल
मानकर ईश्वर तुल्य..!
चाहे इसने देखी हो उतनी ही
दुनिया..जितनी आदमी ने
लेकिन नाम पर
मर्यादा के,परम्परा के..
नाम पर उसूलों, कर्तव्यों के..
या कभी होकर
स्नेह और ममता के वशीभूत..
कभी होकर प्रेम में अभिभूत ..
अक्सर.. वो बन्द कर लेती है..
अपनी आँखें...स्वयं ही..
रख कर आँखों पर
अपनी उन्हीं मर्यादाओं,
परम्पराओं के हाथ..
औरत कर देती है ..
देख कर भी..बहुत कुछ
अनदेखा...!!

हेमन्त बोर्डिया

सृजन-शब्द से शक्ति का

हां!
गर्व है मुझे
मैं स्त्री हूं,..
स्त्री सृजन करती है
अपने समर्पण से अपने परिवार का,
स्त्री सृजन करती है
अपने व्यवहार से अपने परिवेश का,
स्त्री सृजन करती है
अपने बलिदान से समाज का,
स्त्री सृजन करती है
अपने अंश से अपने वंश का,
स्त्री सृजन करती है
अपने ही आत्मबल से अपने अस्तित्व का,
स्त्री सृजन करती है
अपने शब्दों से अभिव्यक्ति का,
वसुधा, प्रकृति, नियति,
संस्कृति, समृद्धि, शक्ति,
रिद्धि, सिद्धि, बुद्धि,
हर रूप में
सृजन के संपूर्ण दायित्व का
निर्वाह करती है स्त्री,..
कैसे मान लूं मैं खुद को अबला
जबकि मुझे पता है स्त्री के गुणधर्म
विधाता ने सृजन का दायित्व
स्त्री को यूंही नहीं सौपा,.
आज तो सिर्फ बीज रोंपा है
यक़ीनन फल मिलेगा,..
तभी तो
आज कर पाई हूं मैं
स्त्री के मनोभावों को
शब्द रूप में अभिव्यक्त करने की
शक्ति को प्रेरित
और
'सृजन-शब्द से शक्ति का'

डा. प्रीति सुराना

नारी

ये जो मौन मुस्कुराकर,
रह जाती हूं न,
हंसकर उड़ा देती हूं,
तल्ख बातों को.
नि:शब्द झेलती हूं,
चूभते-कटाक्षों को.
बहा देती हूं आंसूओं में,
अदम्य इच्छाओं को.
नोंचकर फेंक देती हूं,
सपनों के पंखों को.
न....न...न...न...
कतई नहीं 'नारी' हूं,
निम्न या कमतर हूं,
निरीह या कमजोर हूं.
बस, इसलिए कि,
शेष मुझी में है,
स्निग्धता-तरलता.
मेरे ही भीतर जीती हैं,
मौज में संवेदनाएं.
आलोड़ित है मेरा ही उर,
प्रेम-करूणा,दया-माया से.
बीजवपन-पल्लवन करती,
तुम्हारी जिजीविषा को,
प्रेरित कर, उड़ान देती हूं
जमीं से आसमां तक तुम्हें,
नित नये आयाम देती हूं,
सपनों की पतंग को तुम्हारे.
हां, अहंकार का रावण,
जब लगता है लीलने तुम्हें,
हठधर्मिता से बलात्
संप्रभु बनना चाहते हो,
मेरी ही सृजित सृष्टि की.
खींच लेती हूं डोर,
दुर्गा-काली कहलाती हूं,
रणचंडी बन जाती हूं.
और सत्ता में अपनी,
भागीदारी भी दर्शाती हूं.

पूनम (कतरियार)

एक नहीं दो दो मात्राएँ

एक नहीं दो-दो मात्राएँ,नारी हूँ मैं नारी हूँ,
पुरुषों को जिसने जन्म दिया, मैं ऐसी सिरजनहारी हूँ।

घर के सभी काम करती, पर कोई वेतन नहीं लिया,
सबके चेहरों पर खुशी देख, उसको ही वेतन समझ लिया।
बच्चे और पुरुष सभी, हफ्ते में छुट्टी भरपूर मनाते हैं,
माँ और पत्नी के हिस्से में, कुछ अधिक काम आ जाते हैं।

परिवार के लोगों की पसन्द की फरमाईश पूरी करतीं,
सब काम खुशी से करती हैं, माथे पर शिकन नहीं धरतीं।
त्यौहार कोई आ जाए तो, तब काम और ज्यादा होता,
दिन भर फिरकी सी घूमती हैं, इक पल आराम नहीं मिलता।

फिर भी नादान पूछता है, हम दिन भर क्या करती रहतीं,
भर जाएगी पूरी कापी,लिखने बैठें... हम क्या करतीं।

मैं फुल टाइम वर्किंग वूमेन, पति की पर्सनल सेक्रेट्री हूँ,
घर की आया हूँ,महरी हूँ, और महाराजिन भी हूँ।

पति के लिये मैं मित्र, प्रेमिका रम्भा और मेनका हूँ,
जीवन के इस रंगमंच की सबसे बड़ी नायिका हूँ।
कहने को तो मैं रानी हूँ, सब समझें मुझे नौकरानी,
अपनी पर आ जाऊँ तो, अच्छे अच्छे भरते पानी।

मर जाए किसी की पत्नी, पति फौरन विवाह कर लेता है,
बच्चों को पालने की खातिर, सहयोग नारी' का लेता है।
नारी के सहयोग बिना, बच्चों को नहीं पाल सकता,
दफ्तर को भले सँभाल सके, बच्चों को नहीं पाल सकता।

नारी तो निपट अकेली भी, हर बाधा से लड़ जाती है।
घर की खुशियों की खातिर वो,चुपचाप गरल पी जाती है।
मत समझो इसको कायरता,हम नारी शक्ति स्वरूपा हैं
हम सिरजन भी करती हैं, तो दुष्टों की काल स्वरूपा हैं।

- **राधा गोयल, दिल्ली**

इक फुलवारी हूँ

हाँ,मै नारी हूँ,निज सत्य कभी न हारी हूँ,
मैं त्याग और ममता की इक फुलवारी हूँ।

मै फूल हूँ,मैं गंध कुसुम मतवाली डाली हूँ,
मैं फूलों को नित जन्माने वाली वनमाली हूँ ।
मैं मधुमासो में सावन हूँ,गंगा जैसी पावन हूँ,
यमुना सी बल खाती,नर्मद सी मनभावन हूँ।

मैं चंदन जैसा वंदन हूँ,मैं ही कष्ट निकंदन हूँ,
नेहनीर के मोती सी सच ही प्रीत निबंधन हूँ।
मैं गीत धरा की प्रीत अमर हूँ मस्तानी भी,
देशधरा पर मिटती झाँसी रानी दीवानी भी।

मैं भाग्य-प्रकृति,संस्कृति सम्मान की छाया हूँ
ईश्वर की अनुपम सी कृति और जगमाया हूँ।
आन धरा की शस्यश्यामला पावन माटी की,
मै गौरव अभिमानी, बलिदानी परिपाटी की।

मैं जीवन और मोक्ष अमर हूँ पूरी सृष्टि में,
मैं शक्ति एक परोक्ष समर की दूरी दृष्टि में।

मैं शोला हूँ मैं शबनम आँसू व चिनगारी भी,
मैं एक सुरीला सरगम व साज हियहारी भी।

मैं सरताजो की ताज बनी तीक्ष्ण मद हाला हूँ
मैं बिना पंख परवाज और प्रीत मधुशाला हूँ।
मैं सदगुन हूँ मैं वादा हूँ,संगति में नेकइरादा हूँ,
मैं खंडित मन प्राणअखंडित सारी मर्यादा हूँ।

मैं पूजा हूँ मैं भक्ति और असीमित शक्ति हूँ,
पन्ना सी देश प्रेम की सारभूत अभिव्यक्ति हूँ।
मैं मीरा हूँ मैं राधा हूँ मैं हठी द्रौपदी जैसी हूँ,
नर का हिस्साआधा हूँ,मैं सप्तपदी संवेशी हूँ।

मै पद्मनि मैं रजिया हूँ,मैं ही मेवाड़ी कर्मवती,
मलय क्षीर बगिया सीता,सावित्री, सत्यवती।
मैं नीर भी हूँ मै ज्वाला हूँ शीतलतम हिम सी,
मैं अमृत मय प्याला हूँ संग गरल मद्धिम सी।

नारी अनुपम प्यारी,नेह दुलारी नहीं विचारी हूँ
सृष्टि की हितकारी महतारी व दुष्ट-संहारी हूँ।
मैं ममतामयि नारी परसंग में तीक्ष्ण कटारी हूँ
रिश्तों की मैं संगम,बहिना भैया की प्यारी हूँ।

केवरा यदु "मीरा" राजिम (छ,ग)

मैं नारी हूँ

हां! नारी हूँ
ईश्वर ने मुझे तुम्हारे लिए ही बनाया है
जानती हूँ अधूरी हूँ मैं
और तुमसे ही पूर्णता प्राप्त करूँगी मैं
फिर भी किसी की जागीर नहीं हूँ मैं।
समझूं तुम्हें मुझे साथ लेकर चलो तो
पर सीढ़ी बना कर मुझे तुम अपना मुकाम पा जाओ
तुम्हारी ऐसी कोई तदबीर नहीं हूँ मैं।
तुम्हारे मजबूत हाथों के छूते ही
डर से शीशे सी चटक जाऊं
इतनी भी कोमल तुम्हारे
जेहन में बसी तस्वीर नहीं हूँ मैं।
जमाने ने इतना सताकर इतना तपाया
कि लोहे से पाषाण करदिया है
जरा से भूकंप से हिल जाऊँ
इतनी भी कमजोर नहीं हूँ मैं।
समझूं तुम्हें मसीहा अपना
शायद ये छवि

तुमने मेरी अपने मन में बसा रखी है
उसमे तुम्हारे साथ हो जाऊं
तुम्हारी वो तकदीर नहीं हूँ मैं।
तुमसे मिले हर दुख को मैं
अपने दिल में ठिकाना दे दूँ
और अश्कों को हमेशा अपनी आंखों में लरजने दूं
तुमसे मिले उन अश्को की पीर नहीं हूँ मैं।
हां तुम्हारी बांहों के हार चाहती हूँ जिन्दगी में अपनी
तुम्हारा प्यार चाहिए समर्पित हूँ तुम पर
औरतुममें ही सिमट जाना चाहती हूँ
पर अपना वजूद भूलकर तुम्हारे चरणों में लिपट जाऊं
वो पहले की दासी वाली तासीर नहीं हूँ मैं।
आज की नारी हूँ अपना मुकाम हासिल कर लूंगी
तुम हाथ दोगे साथ चलने में
गुलाब सी महक जाऊंगी
मझधार भी गर छोड़ दिया
अपनी हिफाजत करकिनारा पा लूंगी
भंवर नहीं फसूंगी मैं।

किरण मोर कटनी

औरत

मैं औरत नहीं सदी हूँ, अनवरत बहती नदी हूँ।
शिशु की प्रथम बोली हूँ, गृहस्थ की रंगोली हूँ
बाबुल के आँगन की तुलसी हूँ, माँ की ममता से हुलसी हूँ।
नवयौवना जब बनती, तो बन जाती लजवंती हूँ।
पीहर से जब नैहर जाती हूँ
छोड़ बाबुल की गलियाँ नए रिश्ते निभाती हूँ
साजन के दिल की धड़कन बनकर, मन ही मन इतराती हूँ
दोनों कुल का संगम करती मैं वो महानदी हूँ।
राम कृष्ण और लवकुश को मैंने ही जन्म दिया है
भक्ति रस में डूब गई, तो मीरा बन गरल पिया है
जाने कितनी विभूतियाँ, कोख में मैंने पाले हैं
चीरकर देखो मेरा कलेजा, जाने कितने छाले हैं
मैं ही राधा मैं ही दुर्गा, मैं ही तो सरस्वती हूँ।
देवकी बनकर मैंने कितने लाल कुर्बान किए
बड़े-बड़े वीरों ने मेरी शक्ति को प्रणाम किए
मर्यादा की खातिर, कर्ण जैसे सुत खोती हूँ
ओंठों पर मुस्कान सजाए चुपके-चुपके रोती हूँ
कैकयी जैसी माता बनकर भी, मैं कालजयी हूँ।
तुलसी की रत्ना हूँ, मैं बाल्मिकी की रामायण हूँ
लड़ती रही जनम से मैं, करती नहीं पलायन हूँ

कठोरता की बात करो, तो धरती- सी कठोर हूँ मैं
त्याग, तपस्या और बलिदान की अंतिम छोर हूँ मैं
सत्य मार्ग पर चली हमेशा, मैं वो तारामती हूँ।
वीरता की बात आई तब, जौहर मैं ही दिखलाई
हौसला बुलंद किया है सदा बनकर लक्ष्मी बाई
ईश्वर को भी झुकाया मैंने जब-जब गुहार लगाई
महाभारत के चीरहरण की, निसहाय द्रोपदी हूँ
तो यमराज को झुकाती, सत्यवान की सावित्री हूँ।
जीवन के महासमर में जीत का वरदान हूँ
पति का अभिमान हूँ मैं पुत्रों का सम्मान हूँ
अबला मुझे कभी ना समझो मैं शक्ति की खान हूँ
जीत सका ना कोई मुझे, मैं वो अनवरत संग्राम हूँ
आ जाऊँ अपने पर तो कराल क्रोध रणचंडी हूँ।
दहेज वेदी पर जलती हूँ, फूल-काँटों में पलती हूँ
जाने कितने जन्म गुज़रे, फिर भी आती हूँ
नित नूतन रूप दिखाती, अपना फ़र्ज़ निभाती हूँ
अखिल विश्व की जन्मदात्री, मैं ही तो गायत्री हूँ
पतिव्रता बन चिता सेज पर जलती वही सती हूँ।

सुधा शर्मा, राजिम छत्तीसगढ़

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन क्रान्ति का आरंभ

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

प्रथम अन्तरा शब्दशक्ति से सृजन शब्दशक्ति सम्मान 2017 भोपाल में आयोजित जिसमें विमोचित हुआ साझा संग्रह।

द्वितीय अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 इंदौर में आयोजित जिसमें विमोचित हुए 8 साझा संग्रह और 1 एकल पुस्तक।

महिला दिवस 2018 में विमोचित हुए बुमन आवाज साझा संग्रह, जिसमें शामिल रहीं 50 से अधिक महिलाएँ।

लघु पुस्तिका क्रान्ति का आरंभ हुआ सृजन समीक्षा से, जिसमें 49 किताबों का हुआ विमोचन।

इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का बालाघाट में विमोचन।

भोपाल में आयोजन हुआ बुमन आवाज अवार्ड का जिसमें 55 महिलाओं की 66 पुस्तिकाओं का विमोचन।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सहयोग से हिन्दी आन्दोलन को समर्पित 8 पुस्तिकाओं सहित 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन।

दिल्ली में अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 के आयोजन में 60 से अधिक पुस्तकें विमोचित व रचनाकार सम्मानित।

दिल्ली में मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019 के आयोजन में 30 से अधिक पुस्तकें विमोचन और रचनाकार सम्मानित

- मात्र ११ माह की अवधि से सेवारत
- दो सो अधिक किताबें प्रकाशित
- ५०० से अधिक सम्मानित लोग
- १५० से अधिक एकल पुस्तिकाएँ
- लगभग १५ आयोजन इन ११ माह में
- ५ स्थायी अन्तरा शब्दशक्ति के सम्मान

978-93-86666-01-8

मूल्य - 120/-